RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
दिसंबर
10
2024

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

साइनोबैक्टीरिया / Cyanobacteria

2020 में बोत्सवाना में लगभग 350 हाथियों की अचानक मौत का कारण साइनोबैक्टीरिया से दूषित पानी को माना गया, जिसने जहरीले साइनोटॉक्सिन्स छोड़े।

- साइनोबैक्टीरिया नामक सूक्ष्म जीवों ने पानी में विषैले साइनोटॉक्सिन्स छोड़े, जिससे हाथियों के पीने के जल स्रोत दूषित हो गए।

साइनोबैक्टीरिया क्या है?

साइनोबैक्टीरिया, जिसे नीला-हरा शैवाल भी कहा जाता है, एक सूक्ष्म जीव है जो झील, नदी और तालाब जैसे जल स्रोतों में पाया जाता है। इनमें से कुछ प्रकार हानिकारक शैवाल प्रस्फुटन (HABs) उत्पन्न करते हैं, जो साइनोटॉक्सिन्स नामक जहरीले पदार्थ छोड़ते हैं।

यह हाथियों को कैसे नुकसान पहुँचाता है?

1. **जल स्रोतों का दूषित होना:** साइनोबैक्टीरिया के हानिकारक शैवाल प्रस्फुटन (HABs) पानी को जहरीला बना देते हैं।
2. **पानी पीने से विषाक्तता:** जब हाथी ऐसे दूषित पानी को पीते हैं, तो उनके शरीर में साइनोटॉक्सिन्स प्रवेश कर जाते हैं।
3. **मौत का खतरा:** विषाक्तता के कारण हाथियों के अंग प्रभावित होते हैं, जिससे गंभीर बीमारी या मौत हो सकती है।
4. **पर्यावरणीय कारक:** तापमान में अचानक वृद्धि, पानी में पोषक तत्वों का बढ़ना और लवणता (खारापन) जैसे कारक साइनोटॉक्सिन्स के उत्पादन को बढ़ाते हैं।

2020 में हाथियों की मौत की खोज:

मुख्य बिंदु:

1. **हवाई सर्वेक्षण:**
   - संरक्षण संगठन "एलीफेंट्स विदाउट बॉर्डर्स" ने उत्तरी बोत्सवाना के न्गामिलैंड जिले में हवाई सर्वेक्षण किया।
   - इस सर्वेक्षण में हेलीकॉप्टर से जमीन पर फैले कई हाथियों के शव देखे गए।
2. **मौत के आँकड़े:**
   - 161 हाथियों के शव और 222 कंकाल पाए गए।
   - 2,682 जीवित हाथी भी पूर्वी ओकावांगो पैनहैंडल क्षेत्र में देखे गए।
3. **अचानक मौत का संकेत:**
   - मृत हाथियों के बीच की दूरी यह दर्शाती है कि मौतें धीरे-धीरे नहीं, बल्कि अचानक हुई थीं।
   - शोधकर्ताओं ने शवों के एक साथ पाए जाने को "अचानक और सीमित प्रसार" का संकेत माना।

साइनोबैक्टीरिया के हानिकारक प्रभाव:

सभी शैवाल प्रस्फुटन (blooms) हानिकारक नहीं होते, लेकिन कुछ प्रकार के साइनोबैक्टीरिया साइनोटॉक्सिन्स नामक जहरीले पदार्थ उत्पन्न कर सकते हैं। इनके प्रभाव निम्नलिखित हैं:

प्रभावित प्राणी:

- **पालतू जानवर:** गंभीर बीमारियों या मृत्यु का खतरा।
- **पशुधन और वन्यजीव:** जहरीले पानी के सेवन से मौत या गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं।

मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव:

- **बीमारी:** दूषित पानी के संपर्क या सेवन से इंसानों में बीमारियाँ हो सकती हैं।
- **त्वचा और शारीरिक जलन:** संवेदनशील व्यक्तियों में लाल, उभरे हुए चकत्ते, त्वचा में खुजली, कान और आँखों में जलन हो सकती है।

हाथियों की मौत का कारण कैसे पता चला?

शोधकर्ताओं ने यह निष्कर्ष निकालने से पहले कई संभावित कारणों की जांच की और उन्हें एक-एक करके खारिज किया।

1. अन्य कारणों को खारिज करना:

- **शिकार (Poaching):**
  - शिकार को खारिज कर दिया गया क्योंकि हाथियों के शव उनके दाँतों के साथ पाए गए, जो शिकारियों के द्वारा हटा लिए जाते।
- **बीमारियाँ:**
  - एन्सेफालोमायोकार्डिटिस वायरस, एंथ्रेक्स और अन्य बैक्टीरियल संक्रमणों को कोई बीमारी के लक्षण न मिलने के कारण खारिज कर दिया गया।

2. स्थानिक पैटर्न का विश्लेषण:

- **शवों का वितरण:**
  - हाथियों के शव एक विशेष क्षेत्र में केंद्रित पाए गए, जिससे पता चला कि मौत का कारण किसी स्थानीय पर्यावरणीय कारक से जुड़ा था, न कि किसी बड़े संक्रामक रोग से।

3. पर्यावरण और जल गुणवत्ता की जांच:

- **दूरी का विश्लेषण:**
  - उपग्रह तस्वीरों से पता चला कि हाथियों ने दूषित पानी पीने के बाद औसतन 16.5 किमी की दूरी तय की।
- **मौत का समय:**
  - हाथी दूषित पानी पीने के लगभग 88 घंटे बाद मरे, जो कि अन्य बड़े स्तनधारियों में साइनोटॉक्सिन्स विषाक्तता की ज्ञात समयावधि से मेल खाता है।

4. पूर्व शोध और विशेषज्ञता:

- शोधकर्ता डेविड लोमियो के अफ्रीका में जल गुणवत्ता और सामूहिक मृत्यु घटनाओं पर पिछले शोध ने जल स्रोत के दूषित होने की संभावना को और मजबूत किया। उन्होंने महामारी विज्ञान में उपयोग की जाने वाली भू-स्थानिक और गणनात्मक डेटा विज्ञान तकनीकों को लागू करके इस घटना की जांच की।

नाटो / NATO

हाल ही में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक साक्षात्कार में नाटो से बाहर निकलने की संभावना पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि पद ग्रहण के बाद इस पर गंभीरता से विचार करेंगे।

मुख्य कारण:

1. **आर्थिक असंतुलन:**
   - ट्रंप का मानना है कि नाटो के सदस्य देश, विशेष रूप से यूरोपीय राष्ट्र, व्यापारिक मामलों में अमेरिका के साथ निष्पक्ष व्यवहार नहीं कर रहे हैं।
   - अमेरिका से वाहन और खाद्य उत्पादों जैसे कई प्रमुख वस्तुओं का आयात यूरोपीय देशों द्वारा सीमित है, जिससे व्यापार घाटा बढ़ता है।
   - अमेरिका का मानना है कि व्यापार और सुरक्षा सहयोग दोनों में संतुलन आवश्यक है।
2. **सुरक्षा खर्च का भार:**
   - अमेरिका नाटो का प्रमुख सैन्य और वित्तीय सहयोगी है, जो संगठन की सुरक्षा संरचना को मजबूत बनाए रखने के लिए अरबों डॉलर खर्च करता है।
   - कई सदस्य देश अपनी रक्षा पर न्यूनतम खर्च करते हैं, जबकि अमेरिका नाटो की रक्षा गतिविधियों का मुख्य भार वहन करता है।
   - ट्रंप का तर्क है कि सदस्य देशों को अपनी रक्षा बजट को बढ़ाना चाहिए ताकि सुरक्षा जिम्मेदारियों का उचित बंटवारा हो सके।
3. **भुगतान की मांग:**
   - ट्रंप ने स्पष्ट रूप से कहा है कि नाटो के सदस्य देशों को अपनी रक्षा पर कम से कम 3% जीडीपी खर्च करना चाहिए।
   - कुछ देशों ने इस दिशा में कदम उठाए हैं, जैसे कि पोलैंड ने अपना रक्षा बजट बढ़ाकर 4.7% जीडीपी कर दिया है, जो नाटो में सबसे अधिक है।
   - अमेरिका का मानना है कि यदि सभी देश अपनी हिस्सेदारी समय पर चुकाते हैं, तो संगठन की सामरिक ताकत बढ़ सकती है।
4. **रणनीतिक पुनर्विचार:**
   - यदि नाटो के सदस्य देश आर्थिक और सैन्य सहयोग में निष्पक्षता नहीं दिखाते हैं, तो अमेरिका संगठन से बाहर निकलने पर गंभीरता से विचार कर सकता है।
   - ट्रंप का मानना है कि समान भागीदारी और सहयोग के बिना नाटो की सुरक्षा प्रणाली को बनाए रखना व्यावहारिक नहीं होगा।

नाटो में रक्षा खर्च: योगदानकर्ता-:

संयुक्त राज्य अमेरिका नाटो में रक्षा खर्च के मामले में सबसे बड़ा योगदानकर्ता है, जो नाटो देशों के वार्षिक रक्षा खर्च का लगभग दो-तिहाई हिस्सा है। अमेरिका का रक्षा खर्च नाटो के बाकी देशों के कुल खर्च से अधिक है।

रक्षा खर्च (2024):

- **कुल रक्षा खर्च (यूरोपीय नाटो सदस्य): $380 अरब** (संयुक्त GDP का 2%)
- **संयुक्त राज्य अमेरिका: $967 अरब** (नाटो रक्षा खर्च का दो-तिहाई), GDP का **3.4%**
- **जर्मनी: $97.7 अरब**
- **यूनाइटेड किंगडम: $82.1 अरब**
- **फ्रांस: $64.3 अरब**
- **पोलैंड: $34.9 अरब**

नाटो (NATO) क्या है?

पूरा नाम: North Atlantic Treaty Organisation (उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन)

स्थापना: 4 अप्रैल 1949

मुख्यालय: ब्रुसेल्स, बेल्जियम

नाटो के स्थापना के उद्देश्य:

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद नाटो का गठन शांति बनाए रखने और अपने सदस्य देशों की रक्षा के लिए किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य सामूहिक सुरक्षा प्रदान करना और राजनीतिक और सैन्य सहयोग को बढ़ावा देना है।

स्थापना करने वाले देश:

नाटो की स्थापना 12 देशों ने मिलकर की थी: **बेल्जियम, कनाडा, डेनमार्क, फ्रांस, आइसलैंड, इटली, लक्ज़मबर्ग, नीदरलैंड्स, नॉर्वे, पुर्तगाल, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका।**

मुख्य सिद्धांत:

अनुच्छेद 5: यदि किसी सदस्य देश पर हमला होता है, तो इसे सभी सदस्य देशों पर हमला माना जाएगा। यह सिद्धांत सामूहिक रक्षा (Collective Defense) कहलाता है।

अनुच्छेद 51 (यूएन चार्टर): यह व्यक्तिगत और सामूहिक सुरक्षा के अधिकार को मान्यता देता है।

नाटो का कामकाज:

1. **राजनीतिक निर्णय:**
   - **North Atlantic Council (उत्तरी अटलांटिक परिषद):** यह नाटो की मुख्य राजनीतिक निर्णय लेने वाली संस्था है।
2. **सैन्य संरचना:**
   - **सैन्य कमांड:** सामरिक और क्षेत्रीय कमांड से मिलकर बना है।
   - **संयुक्त सैन्य बल:** सदस्य देश अपनी सेना, उपकरण और संसाधनों को नाटो कमांड के तहत संचालित करते हैं।
3. **वित्तीय सहयोग:**
   - सभी सदस्य देश अपनी सकल राष्ट्रीय आय (GNI) के आधार पर संगठन के खर्चों में योगदान करते हैं।

सार्क का 40वां चार्टर दिवस / 40th Charter Day of SAARC

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) चार्टर पर हस्ताक्षर की **40वीं वर्षगांठ** 8 दिसंबर को मनाई गई। यह चार्टर **8 दिसंबर 1985** को **ढाका में पहले शिखर सम्मेलन** में हस्ताक्षरित हुआ था।

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क)

परिचय:

- **सार्क (SAARC)** दक्षिण एशिया के देशों के बीच **क्षेत्रीय सहयोग** को बढ़ावा देने के लिए एक **आंतर्राष्ट्रीय संगठन** है।
- इसकी स्थापना **8 दिसंबर 1985** को **ढाका, बांग्लादेश** में हुई थी।

स्थापना:

- **प्रस्तावना:** 1980 में **बांग्लादेश के राष्ट्रपति जियाउर रहमान** ने **क्षेत्रीय सहयोग** का प्रस्ताव रखा।
- **पहले सदस्य:** **7 संस्थापक सदस्य** देश - **बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका**।
- **आठवां सदस्य:** **अफगानिस्तान** 2007 में संगठन में शामिल हुआ।

उद्देश्य:

1. **क्षेत्रीय कल्याण:** दक्षिण एशिया के लोगों का **कल्याण** और **जीवन स्तर सुधारना**।
2. **आर्थिक और सामाजिक विकास:** **आर्थिक वृद्धि, सामाजिक प्रगति, और सांस्कृतिक विकास** को बढ़ावा देना।
3. **आपसी सहयोग:** **विज्ञान, तकनीक, अर्थव्यवस्था, समाज, और संस्कृति** जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाना।
4. **आत्मनिर्भरता:** सदस्य देशों के बीच **आत्मनिर्भरता और विश्वास** को मजबूत करना।
5. **वैश्विक सहयोग:** **विकासशील देशों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों** के साथ **सहयोग** करना।

मुख्य सिद्धांत:

- **समानता और संप्रभुता** का सम्मान।
- **क्षेत्रीय अखंडता** और **आंतरिक मामलों में गैर-हस्तक्षेप**।
- **सर्वसम्मति** के आधार पर निर्णय लेना।

महत्व:

- **क्षेत्रीय क्षेत्रफल:** विश्व का **3% क्षेत्रफल**।
- **जनसंख्या:** **21% वैश्विक जनसंख्या**।
- **वैश्विक अर्थव्यवस्था:** **5.21% (4.47 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर)** का योगदान (2021 के अनुसार)।

सहयोग के मुख्य क्षेत्र:

1. **व्यापार और वाणिज्य:**
   - **दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (SAFTA):** 2006 से लागू, शुल्क दरों में कमी और मुक्त व्यापार को बढ़ावा देता है।
2. **सेवा क्षेत्र का व्यापार (SATIS):**
   - 2012 में लागू, सेवा क्षेत्र के व्यापार को उदार बनाने और आंतरिक निवेश को बढ़ावा देने के लिए समझौता।

सार्क की उपलब्धियां:

- **मुक्त व्यापार क्षेत्र (FTA):** सदस्य देशों के बीच व्यापार बढ़ाने और व्यापार घाटा कम करने के लिए स्थापित।
- **SAPTA (1995):** दक्षिण एशियाई वरीयता व्यापार समझौता।
- **SAFTA (2006):** वस्तुओं के लिए शुल्कों को समाप्त करने के लिए एक मुक्त व्यापार समझौता।
- **SATIS:** सेवा क्षेत्र में व्यापार को बढ़ावा देने के लिए समझौता।
- **सार्क विश्वविद्यालय:** भारत में स्थापित एक प्रमुख शैक्षणिक संस्थान।

भारत के लिए सार्क का महत्व:

- **पड़ोसी प्रथम नीति:** भारत के निकटवर्ती देशों को प्राथमिकता।
- **भू-राजनीतिक महत्व:** नेपाल, भूटान, मालदीव और श्रीलंका जैसे देशों के साथ विकास और सहयोग से चीन के प्रभाव को कम कर सकता है।
- **क्षेत्रीय स्थिरता:** आपसी विश्वास और शांति स्थापित करने में सहायक।
- **वैश्विक नेतृत्व:** भारत को क्षेत्रीय नेतृत्व की भूमिका निभाने का मंच प्रदान करता है।
- **एक्ट ईस्ट नीति:** दक्षिण एशियाई अर्थव्यवस्थाओं को दक्षिण पूर्व एशिया से जोड़कर भारत की आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देता है।

विदेशी मुद्रा भंडार / foreign exchange reserves

भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में नौ सप्ताह बाद महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की गई है। 9 नवंबर को भंडार 1.51 अरब डॉलर की वृद्धि के साथ 658.09 अरब डॉलर पर पहुंच गया। इससे पहले, विदेशी मुद्रा भंडार में लगातार गिरावट के कारण यह पांच महीने के निचले स्तर पर आ गया था। इस वृद्धि को देश की आर्थिक स्थिरता और विदेशी निवेशकों के विश्वास के संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि के कारक:

1. विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियों (FCAs) में वृद्धि:

- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के साप्ताहिक सांख्यिकीय परिशिष्ट के अनुसार, विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियों में $2.06 बिलियन की वृद्धि हुई, जिससे यह $568.85 बिलियन हो गई।

2. निवेश में वृद्धि:

- 2013 के बाद से भारत ने बेहतर आर्थिक स्थितियों के कारण विदेशी निवेश आकर्षित करके अपने विदेशी मुद्रा भंडार को मजबूत किया है।

3. विदेशी पूंजी प्रवाह:

- 2024 में विदेशी पूंजी प्रवाह $30 बिलियन तक पहुंच गया, जिसमें स्थानीय ऋण निवेश का महत्वपूर्ण योगदान रहा, जिसे जे.पी. मॉर्गन इंडेक्स में शामिल किया गया है।

4. RBI के हस्तक्षेप:

- RBI ने $4.8 बिलियन के डॉलर खरीदे और $7.8 बिलियन का लाभ अमेरिकी ट्रेजरी बॉन्ड्स की यील्ड, डॉलर की मजबूती और सोने की बढ़ती कीमतों से हुआ।

5. बाजार स्थिरता:

- पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार ने रुपये की विनिमय दर में स्थिरता बनाए रखने में मदद की, जिससे RBI को आवश्यकतानुसार हस्तक्षेप करने की शक्ति मिली।

6. विनिमय दर नियंत्रण:

- RBI ने उभरते बाजारों की मुद्राओं में रुपये की स्थिरता को बनाए रखा है, जिससे मुद्रा में अस्थिरता कम हुई है।

7. व्यापार घाटा और सेवा निर्यात:

- भारत के व्यापार घाटे और सेवा निर्यात का विदेशी मुद्रा भंडार के उतार-चढ़ाव से सीधा संबंध है।
- वस्त्र व्यापार घाटा: 2023-24 में भारत का व्यापार घाटा $242.07 बिलियन रहा, जिसमें आयात $683.55 बिलियन और निर्यात $441.48 बिलियन था।
- सेवाएं और प्रेषण: 2023-24 में सॉफ्टवेयर सेवा निर्यात $142.07 बिलियन हो गया, जबकि निजी प्रेषण $106.63 बिलियन तक पहुंच गया।

विदेशी मुद्रा भंडार के बारे में:

विदेशी मुद्रा भंडार वह संपत्ति होती है जो विदेशी मुद्रा में निर्धारित होती है और केंद्रीय बैंक के पास रिजर्व के रूप में रखी जाती है। भारत में, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया एक्ट और विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम, 1999 विदेशी मुद्रा भंडार को नियंत्रित करने के कानूनी प्रावधानों को स्थापित करते हैं।

भारत के विदेशी मुद्रा भंडार की संरचना:

1. **विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियाँ**
2. **सोने का भंडार**
3. **विशेष आहरण अधिकार (SDR)**
4. **IMF में रिजर्व स्थिति**

विदेशी मुद्रा भंडार का महत्व:

1. **आर्थिक स्थिरता और निवेशकों का विश्वास:** विदेशी मुद्रा भंडार वित्तीय स्थिरता बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह बाजार की उम्मीदों को सेट करता है और आर्थिक झटकों के खिलाफ एक सुरक्षा कवच प्रदान करता है। मजबूत विदेशी मुद्रा भंडार निवेशकों को आश्वस्त करता है और समग्र आर्थिक स्वास्थ्य में योगदान करता है।
2. **आर्थिक संकट और तरलता**: संकट के समय, केंद्रीय बैंक विदेशी मुद्रा को स्थानीय मुद्रा में बदल सकता है, जिससे कंपनियों को आयात और निर्यात में प्रतिस्पर्धी बनाए रखने में मदद मिलती है।
3. **मुद्रास्फीति और मुद्रा मूल्य में गिरावट:** जापान जैसे देश, जो फ्लोटिंग एक्सचेंज रेट प्रणाली का उपयोग करते हैं, अमेरिकी ट्रेजरी खरीदकर अपनी मुद्रा को डॉलर के मुकाबले कम रखते हैं, ताकि निर्यात प्रतिस्पर्धी बना रहे।
4. **अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय दायित्व:** विदेशी मुद्रा भंडार अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में मदद करता है, जैसे कि कर्ज चुकाना और आयात वित्त पोषित करना।
5. **आंतरिक परियोजना वित्तपोषण:** विदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग घरेलू बुनियादी ढांचे और औद्योगिक परियोजनाओं के लिए भी किया जा सकता है।
6. **निवेशकों का विश्वास:** संकट या अनिश्चितता के समय में विदेशी मुद्रा भंडार रखने से विदेशी निवेशकों में विश्वास बढ़ता है।
7. **पोर्टफोलियो विविधीकरण:** केंद्रीय बैंक अपने भंडार को विभिन्न मुद्राओं और संपत्तियों में निवेश करके विविधित करते हैं, ताकि गिरती हुई संपत्तियों के जोखिम से बचा जा सके।

गोलान हाइट्स / Golan Heights

इजरायल के प्रधानमंत्री ने घोषणा की है कि उनकी सेना ने गोलान हाइट्स में एक निरस्त्रीकृत बफर ज़ोन पर अस्थायी रूप से नियंत्रण कर लिया है। उन्होंने कहा कि 1974 में सीरिया के साथ हुआ विघटन समझौता सीरिया में विद्रोहियों के नियंत्रण के कारण "विफल" हो चुका है।

वर्तमान स्थिति:

इसराइल की सेना ने गोलान हाइट्स में स्थित एक निरस्त्रीकृत बफर ज़ोन पर अस्थायी रूप से नियंत्रण स्थापित कर लिया है।

- सीरिया में राष्ट्रपति बशर अल-असद के सत्ता खोने के बाद विद्रोहियों ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया, जिससे गोलान हाइट्स में रह रहे इसराइली नागरिकों की सुरक्षा को गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है।
- इसी खतरे को ध्यान में रखते हुए, इसराइल ने बफर ज़ोन पर अपना नियंत्रण स्थापित किया है ताकि सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

गोलान हाइट्स:

गोलान हाइट्स दक्षिण-पश्चिमी सीरिया में स्थित एक पथरीला पठार है, जो दमिश्क से लगभग 60 किलोमीटर (40 मील) दक्षिण में है। यह क्षेत्र अपनी रणनीतिक स्थिति और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है।

1. **आकार और क्षेत्रफल**:
   - इसकी लंबाई उत्तर से दक्षिण तक लगभग 71 किलोमीटर (44 मील) और चौड़ाई पूर्व से पश्चिम तक लगभग 43 किलोमीटर (27 मील) है।
   - इसका कुल क्षेत्रफल 1,150 वर्ग किलोमीटर है।

इतिहास और रणनीतिक महत्व:

1. **छह-दिवसीय युद्ध (1967)**:
   - इसराइल ने 1967 में सीरिया के साथ हुए छह-दिवसीय युद्ध के दौरान गोलान हाइट्स पर कब्जा कर लिया।
   - युद्ध के बाद, इलाके में रहने वाले अधिकांश सीरियाई अरब लोग अपने घर छोड़ने के लिए मजबूर हो गए।
2. **मध्य पूर्व युद्ध (1973)**:
   - सीरिया ने 1973 के युद्ध के दौरान गोलान हाइट्स को पुन: प्राप्त करने की कोशिश की।
   - हालांकि, सीरियाई सेना ने इसराइल को गंभीर क्षति पहुंचाई, लेकिन यह क्षेत्र वापस हासिल नहीं कर पाई।
3. **युद्धविराम और संयुक्त राष्ट्र की भूमिका (1974)**:
   - 1974 में, दोनों देशों ने एक युद्धविराम समझौता किया और संयुक्त राष्ट्र पर्यवेक्षक बल (UNDOF) को तैनात किया गया।
   - यह बल आज भी युद्धविराम रेखा की निगरानी कर रहा है।
4. **इसराइल का विलय (1981)**:
   - इसराइल ने 1981 में गोलान हाइट्स को अपने क्षेत्र में शामिल करने की एकतरफा घोषणा की।
   - हालांकि, इस कदम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता नहीं मिली। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने इसे अवैध घोषित किया।

शांति वार्ताओं का इतिहास:

1. **1999-2000 की वार्ता**: अमेरिका ने इसराइल और सीरिया के बीच वार्ता की, जिसमें गोलान हाइट्स का कुछ हिस्सा लौटाने की बात की गई, लेकिन इसराइल ने सी ऑफ गैलीली की मांग को नकारा, जिससे वार्ता विफल हो गई।
2. **2003 की पहल**: सीरिया के राष्ट्रपति बशर अल-असद ने वार्ता शुरू करने की इच्छा जताई, लेकिन कोई ठोस प्रगति नहीं हुई।
3. **2008 की अप्रत्यक्ष वार्ता**: तुर्की की मध्यस्थता से वार्ता शुरू हुई, लेकिन भ्रष्टाचार मामले के कारण इसे रोक दिया गया।
4. **बिन्यामिन नेतन्याहू का सख्त रुख (2009)**: नेतन्याहू ने गोलान हाइट्स पर कड़ा रुख अपनाया, जिससे सीरिया ने इसराइल पर वार्ता में रुचि न दिखाने का आरोप लगाया।
5. **बराक ओबामा का प्रयास (2009)**: ओबामा ने वार्ता शुरू करने की कोशिश की, लेकिन 2011 में सीरिया में गृह युद्ध के कारण स्थिति बिगड़ गई।
6. **2013 की घटना**: सीरियाई विद्रोहियों द्वारा युद्धविराम रेखा पर गोलीबारी के बाद इसराइल ने जवाब दिया, जिससे संघर्ष और बढ़ गया।

गोलान हाइट्स की अंतरराष्ट्रीय मान्यता:

- **अमेरिकी**: 2019 में, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गोलान हाइट्स को इसराइल की संप्रभुता को मान्यता दी।
- **यूरोपीय संघ**: गोलान हाइट्स के स्थिति पर उसकी स्थिति अपरिवर्तित रही है और उसने इस क्षेत्र पर इसराइल की संप्रभुता को मान्यता नहीं दी है।
- **अरब लीग**: जो 2011 में सीरिया को अपने सदस्यता से निलंबित कर दिया था, उसने इस निर्णय को "अंतरराष्ट्रीय कानून के पूर्ण विपरीत" करार दिया।
- **मिस्र**: जिसने 1979 में इसराइल के साथ शांति समझौता किया था, ने कहा कि वह गोलान हाइट्स को अभी भी क जे वाले सीरियाई क्षेत्र के रूप में मानता है।
- **भारत**: भारत ने भी गोलान हाइट्स को इसराइल का क्षेत्र नहीं माना है और इसे सीरिया को वापस लौटाने की मांग की है।

भारत का भूस्थानिक बाज़ार / India's geospatial market

भारत का भू-स्थानिक बाजार 2024 के भारत भू-स्थानिक बाजार आउटलुक के अनुसार, 2025 तक 16.5% की वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) से बढ़कर 25,000 करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान है। 2023 में इस बाजार का मूल्य लगभग 18,000 करोड़ रुपये था।

भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी क्या है?

भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी में स्थान आधारित विश्लेषण, वास्तविक समय का डेटा मानचित्रण, हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजिंग, और ड्रोन-आधारित सर्वेक्षण शामिल हैं। ये उपकरण शहरी विकास, बुनियादी ढांचा विकास, कृषि, जलवायु अध्ययन, और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं।

भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों का महत्व:

1. **कृषि:**
   ड्रोन और सैटेलाइट इमेजिंग के माध्यम से सटीक कृषि (Precision Agriculture) में फसल की पैदावार में सुधार और संसाधनों का बेहतर उपयोग संभव होता है।
2. **आपदा प्रबंधन:**
   भू-स्थानिक डेटा बाढ़, सूखा और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के लिए पहले से चेतावनी देने में मदद करता है, जिससे बेहतर तैयारियों की सुविधा मिलती है।
3. **शहरी विकास:**
   स्मार्ट सिटीज में ट्रैफिक प्रबंधन, कचरा संग्रहण और सार्वजनिक सेवाओं के लिए GIS (Geographic Information Systems) का उपयोग किया जाता है।
4. **पर्यावरणीय निगरानी:**
   यह वनों की कटाई, जल निकायों और प्रदूषण की निगरानी करने में मदद करता है, जो जलवायु कार्रवाई के लक्ष्यों को समर्थन प्रदान करता है।
5. **रक्षा और सुरक्षा:**
   भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी सीमा निगरानी, मानचित्रण और रणनीतिक संचालन के लिए महत्वपूर्ण होती है।

प्रौद्योगिकी में प्रगति:

1. **हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजिंग:**
   यह तकनीक सैकड़ों प्रकाश तरंग दैर्ध्य (wavelengths) को कैप्चर करती है, जिससे कई कार्यों में मदद मिलती है जैसे:
   - फसल रोगों और मिट्टी के पोषक तत्वों का जल्दी पता लगाना।
   - जल प्रदूषण और मीथेन रिसाव की निगरानी करना।
2. **ड्रोन प्रौद्योगिकियाँ:**
   कंपनियां जैसे *ideaForge* ने डेटा संग्रहण में क्रांतिकारी बदलाव किए हैं, जो रक्षा और खनन जैसे क्षेत्रों में सेंटीमीटर स्तर की सटीकता प्रदान करती हैं।

चुनौतियाँ:

1. **डेटा सुरक्षा**: भू-स्थानिक डेटा संवेदनशील होता है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बन सकता है।
2. **जागरूकता की कमी:** छोटे उद्यमों में भू-स्थानिक अनुप्रयोगों के बारे में सीमित जागरूकता है।
3. **इन्फ्रास्ट्रक्चर गैप:** भू-स्थानिक इन्फ्रास्ट्रक्चर तक व्यापक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता है।
4. **कौशल की कमी:** भू-स्थानिक डेटा विश्लेषण और ड्रोन प्रौद्योगिकियों में प्रशिक्षित पेशेवरों की आवश्यकता है।

सरकारी पहलें:

- **PM Gati Shakti:** यह पहल बुनियादी ढांचे के विकास के लिए वास्तविक समय मानचित्रण का उपयोग करती है।
- **राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति 2022:** इसका उद्देश्य भू-स्थानिक डेटा को लोकतांत्रिक बनाना और सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देना है।
- **स्मार्ट सिटीज मिशन:** यह मिशन शहरी नियोजन में सुधार के लिए स्थान-आधारित विश्लेषण का उपयोग करता है।

हॉर्नबिल महोत्सव / Hornbill Festival

हॉर्नबिल महोत्सव, नागालैंड का प्रमुख सांस्कृतिक और पर्यटन मेला है, जो हर साल 1 से 10 दिसंबर तक आयोजित होता है।

हॉर्नबिल महोत्सव (Hornbill Festival)

- **प्रारंभ:** इस महोत्सव की शुरुआत 2000 में हुई थी।
- इसे "**त्योहारों का त्योहार**" भी कहा जाता है और यह हर साल मनाया जाता है।
- **संगठन:** इसे नागा**लैंड सरकार के पर्यटन और कला व संस्कृति विभागों** द्वारा आयोजित किया जाता है।
- **स्थान:** यह महोत्सव **नागा हेरिटेज विलेज, किसामा** में मनाया जाता है, जो **कोहिमा** से लगभग **12 किलोमीटर** दूर है।
- **उद्देश्य:** इसका मुख्य उद्देश्य **आंतर-जनजातीय संवाद** को बढ़ावा देना और नागालैंड की धरोहर को संरक्षित करना है, जिसमें पारंपरिक और समकालीन तत्वों का सामंजस्यपूर्ण रूप से प्रदर्शित किया जाता है।
- **विकास:** यह महोत्सव अब **नागालैंड की विभिन्न जनजातियों की सांस्कृतिक और पारंपरिक धरोहर** को प्रदर्शित करने का एक उत्सव बन चुका है।
- **नामकरण:** इसे **हॉर्नबिल पक्षी** के नाम पर रखा गया है, क्योंकि यह पक्षी नागा समाज के **सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन** से जुड़ा हुआ है।

2024 का हॉर्नबिल महोत्सव (Cultural Connect) - मुख्य बिंदु:

- **विषय:** इस वर्ष का विषय "Cultural Connect" है, जो नागालैंड की समृद्ध धरोहर और सांस्कृतिक विविधता का उत्सव है।
- **आधुनिकता और परंपरा का सम्मिलन:** महोत्सव में **नागा कुश्ती**, **पारंपरिक धनुर्विद्या**, **खाद्य और औषधि स्टॉल**, **फैशन शो**, **सुंदरता प्रतियोगिताएं**, और **संगीत कार्यक्रम** शामिल हैं।
- **विशेष प्रदर्शनी:** **"Naga-Land & People in Archival Mirror"** प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है, जो नागालैंड के इतिहास और सांस्कृतिक प्रथाओं का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करेगी, जिसे भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के सहयोग से किया जा रहा है।

नागालैंड के बारे में प्रमुख तथ्य:

1. **राज्यत्व:** नागालैंड को 1 दिसंबर 1963 को भारत का 16वां राज्य बना।
2. **सीमाएं:**
   - पश्चिम और उत्तर-पश्चिम: असम
   - पूर्व: म्यांमार
   - दक्षिण: अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर
3. **राज्य प्रतीक:**
   - राज्य पक्षी: ब्लीथ का ट्रैगोपान
   - राज्य पशु: मिथुन (जो नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश का राज्य पशु है)
   - मिथुन (Bos frontalis), एक बवाइन प्रजाति, जो अब FSSAI द्वारा 'फूड एनिमल' के रूप में मान्यता प्राप्त है, जिससे इसका वाणिज्यिक पालन और मांस प्रसंस्करण संभव हुआ है।
4. **GI उत्पाद:**
   - नगा ट्री टमाटर
   - नगा खीरा
   - नगा मिर्च (चिली)
5. **संरक्षित क्षेत्र:**
   - इंटांकी नेशनल पार्क
   - फाकिम वाइल्डलाइफ सेंचुरी
   - सिंगफान वाइल्डलाइफ सेंचुरी
   - पुली बदजे वाइल्डलाइफ सेंचुरी
6. **जनजातियाँ और संस्कृति:**
   - नागालैंड में 17 प्रमुख जनजातियाँ और अनेक उप-जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनकी अपनी विशेष परंपराएँ, भाषाएँ और पोशाक हैं।

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) के 26वें गवर्नर / 26th Governor of the Reserve Bank of India

भारत सरकार ने संजय मल्होत्रा को भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) के 26वें गवर्नर के रूप में नियुक्त किया है। उनका कार्यकाल तीन वर्ष का होगा, जो 11 दिसंबर 2024 से शुरू होगा। मल्होत्रा ने शक्तिकांत दास की जगह ली है, जिनका कार्यकाल समाप्त हो गया है।

संजय मल्होत्रा के बारे में :

शैक्षणिक पृष्ठभूमि:

- कंप्यूटर साइंस में ग्रेजुएशन: IIT कानपुर।
- पब्लिक पॉलिसी में मास्टर्स: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी।

- **अधिकार एवं अनुभव**:
  - अक्टूबर 2022 से राजस्व सचिव।
  - वित्तीय सेवा सचिव, RBI बोर्ड के सदस्य और REC (इंफ्रा फाइनेंस कंपनी) के CMD रह चुके हैं।
  - तेज निर्णय लेने और बारीकी पर ध्यान देने के लिए जाने जाते हैं।
- **आगामी चुनौतियां**:
  - **विकास और मुद्रास्फीति** संतुलन बनाए रखना।
  - 4% मुद्रास्फीति लक्ष्य सुनिश्चित करना।
  - **क्रेडिट प्रवाह** बनाए रखना और बैंक बैलेंस शीट के जोखिमों पर नजर।
  - **विदेशी मुद्रा दर** को व्यवस्थित रूप से प्रबंधित करना।

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) के बारे में:

- **स्थापना**: 1934 में **RBI अधिनियम** के तहत; 1949 में राष्ट्रीयकरण।
- **मुख्यालय**: मुंबई।
- **पहला गवर्नर**: ऑस्बॉर्न स्मिथ; प्रथम भारतीय गवर्नर: सी.डी. देशमुख।
- **संरचना**:
  - **21 सदस्यीय केंद्रीय बोर्ड**: 1 गवर्नर, 4 डिप्टी गवर्नर, 2 वित्त मंत्रालय प्रतिनिधि, 10 सरकार द्वारा नामित निदेशक, और 4 स्थानीय बोर्ड निदेशक।

मुख्य कार्य:

- **मुद्रा प्रबंधन**: रुपये की आपूर्ति, जारी करना और प्रबंधन।
- **वित्तीय निरीक्षण**: बैंकिंग और वित्तीय प्रणाली को नियमित करना।
- **विदेशी मुद्रा प्रबंधन**: विदेशी व्यापार और भुगतान को सुविधाजनक बनाना।
- **मुद्रास्फीति नियंत्रण**: मूल्य स्थिरता और आर्थिक विकास को सुनिश्चित करना।
- **विकासात्मक भूमिका**: राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए प्रमोटर के रूप में काम।

संबंधित कार्य:

- सरकार और बैंकों का बैंकर।
- भुगतान और निपटान प्रणाली का निरीक्षण।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !

RRB NTPC
TEST SERIES
100+ Mock Test
78 Sectional Test
40+ years PYPs
60+ Current affairs
TEST
Only
99
Per Year
Buy Now

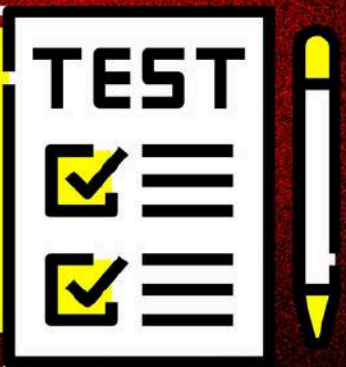

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

FOR ALL

- POLITY
- ECONOMICS
- HISTORY
- GEOGRAPHY

- DAILY LIVE CLASSES
- , WEEKLY TEST
- CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
- LIVE DOUBT SESSIONS
- DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs 4999/-

Apni Pathshala 7878158882 Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

ONLY
POLITY
1499
RS
DAILY LIVE CLASSES
, WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTISE PROBLEM
Apni Pathshala
7878158882
Apni.Pathshala
kaankit
AnkitAvasthiSir
Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

Stenographer (Grades C & D)

Only at

99/-Year

Enroll Now !